कलचुरिकालीन राजनीतिक इतिहास : रायपुर शाखा के विशेष संदर्भ में

Preetam[1], & Dr. Anju Tiwari[2]
[1]Research Scholar,[2] Associate Professor,
[1,2,]Department of History, Dr C. V. Raman University, Bilaspur, India

Received: January 24, 2019 Accepted: February 25, 2019

सांराश :– छत्तीसगढ़ के इतिहास में कलचुरि राजवंश का महत्वपूर्ण स्थान है। छत्तीसगढ़ का वास्तविक राजनीतिक इतिहास कलचुरि राजवंश की स्थापना के साथ आरंभ होता हैं। कलचुरियों ने छत्तीसगढ़ पर लगभग नौ सदियों तक (875–1741ई.) राज्य किया। कलचुरि (हैहय) ने भारत के अनेक स्थानों पर शासन किया। उनकी कई शाखाएँ थी जिनमें से दो छत्तीसगढ़ में स्थापित हुई :– रतनपुर एवं रायपुर।

शब्द कुंजी :–राय, हाटकेश्वर मंदिर, दूधाधारी महाराज, रजबंधा तालाब, राजा तालाब, खो–खो तालाब।

प्रस्तावना :–मध्यप्रान्त का पूर्वी हिस्सा महाभारत काल मे महाकौशल कहलाता था, और यहां के शासक हैहवंशीय थे। पुराणों में इस वंश का विवरण सविस्तार मिलता है। ब्रह्म के पुत्र अत्रि और पौत्र सोम से सम्बधित होने के कारण यह वंश सोमवंशी कहलाया। सोम का पुत्र बुद्ध और बुद्ध का पुत्र पुरूरवा हुआ था, जिसके सात पुत्र सहृत्रद और सहृत्रद का पुत्र हैहय था। उसने नर्मदा नदी के तट पर राज्य स्थापित कर अपना वंश चलाया। इसी हैहय वंश में कोकल्लदेव नामक चेदि देश का प्रबल राजा हुआ , जिसके वंशज कलचुरि कहलाये।

व्याख्या :–जिस प्रकार प्रबंध के उद्देश्य से त्रिपुरी की एक शाखा तुम्माण में बिठाई गयी थी, उसी प्रकार तुम्माण की एक शाखा प्रौढ होने पर खल्लारी में स्थापित की गई। रायपुर जिले में खल्लारी एक प्राचीन गांव है। मल्हार शिलालेख से पता चलता है, कि लक्ष्मीदेव रायपुरी हैहयवशी राजवंश के संस्थापक थे, जो रतनपुर के हैहयवंशियों की ही एक शाखा थी, और उनका शासन काल 1300 ई. के आसपास रहा होगा।

शिलालेख के अनुसार, 14वीं सदी ई. के अंतिम भाग में रतनपुर के राजा का रिश्तेदार लक्ष्मीदेव प्रतिनिधि स्वरूप (आधुनिक खल्लारी रायपुर जिला) भेजा गया और वह वहीं का होकर रह गया लक्ष्मीदेव के पुत्र ने शत्रुओं के 18 गढ़ जीत लिये। सिंघण ने रतनपुर नरेश को प्रभुसत्ता मानने से इंकार कर दिया। सिंघण के बाद उसका पुत्र रामचन्द्र रायपुर का शासक बना। रामचन्द्र देव के बाद उसका पुत्र ब्रह्मदेव रायपुर का शासक बना।

रायपुर में शासन करने वाले कुछ कलचुरि राजकुमारों के विषय में रायपुर के खल्लारी शिलालेखों में कुछ उल्लेख मिलता है। अभिलेख 1402 व 1414 ई. के है। इसमें बताया गया है, कि रायपुर में एक राजकुमार शासन करता था, जिसका नाम लक्ष्मीदेव था।[1]

रतनपुर के कलचुरि शाखा ब्रह्मदेव के दो शिलालेख प्राप्त हुए है। उनमें से एक विक्रम् संवत् 1458 का है, दूसरा विक्रम् संवत् 1470 का है। इन दोनों शिलालेखों में दी गयी वंशावली से रायपुर के चार कलचुरि राजाओं के नाम ज्ञात होता है :–

1. **लक्ष्मीदेव**
2. **सिंघण**
3. **रामचन्द्र**
4. **ब्रह्मदेव**

इन राजा में से प्रथम दो राजाओं के नाम रतनपुर की वंशावली में भी मिलते है। जो वहां के राजा वाहर (वाहरेन्द्र) के पूर्वज थे। इससे ज्ञात होता है कि राजा सिंघण के डंधीर और रामचन्द्र नामक दो बेटों में से डंधीर को रतनपुर की सत्ता एवं रामचन्द्र को रायपुर की सत्ता सौंपी गयी। रामचन्द्र ने रायपुर नगर बसाकर अपनी राजधानी स्थापित की। ब्रह्मदेव के खल्लारी लेख से विदित होता है। कि रामचन्द्र ने फणी (नाग) वंश के राजा भोणिगदेव को जीता था।

रामचन्द्र के समय में छत्तीसगढ़ में कवर्धा और बस्तर में दो अलग–अलग नागवंशी राजाओं का राज्य था। किन्तु भोणिगदेव किस वंश से थे स्पष्ट नही है। उत्कीर्ण लेख से विदित होता है कि ब्रह्मदेव की राजधानी वर्तमान खल्लारी में थी। जहां सन् 1415 ईस्वी में देवपाल नामक मोची ने नारायण के मंदिर का निर्माण कराया था। ब्रह्मदेव के रायपुर शिलालेख से विदित होता है कि उसके शासन काल में सन 1402 ई. में रायपुर शुभस्थान में नायक हाजिराज ने हाटकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण किया था।

खारून नदी के तट पर महांदेवघाट में निर्मित मंदिर ही हाटकेश्वर महादेव मंदिर है। इसी लेख में ब्रह्मदेव के प्रधान ठाकुर (मंत्री) का नाम त्रिपुरारिदेव और पुरोहित का नाम महादेव जान पड़ता है। ब्रह्मदेव के बाद के शासकों के कोई अभिलेख नही मिलते है केवल अंतिम शासक अमरसिंहदेव का एक अभिलेख आरंग से मिला है। यह ताम्रपत्र विक्रम संवत् 1792 में जारी किया गया था, जिसके कुछ वर्षो के बाद नागपुर के मराठों के हाथों से अमरसिंह का पतन हुआ।[2]

रायपुर के हैहयवंशी कलचुरियों का वैभवशाली इतिहास निम्नानुसार है। :–

लक्ष्मीदेव– रायपुर कलचुरि राजवंश के प्रथम शासक के रूप में लक्ष्मीदेव का नाम मिलता है। कलचुरि शिलालेख के अनुसार 14वीं शताब्दी ई. के मध्य में रतनपुर के राजा के रिश्तेदार लक्ष्मीदेव को प्रतिनिधि स्वरूप खल्लारी जिला–रायपुर भेजा गया। कलचुरि राज्य के प्रतिनिधि लक्ष्मीदेव ने अनुकूल वातावरण के कारण खल्लारी में स्थापित होकर कलचुरि राजवंश की नींव डाली।

सिंघण– रायपुर कलचुरि वंश में लक्ष्मीदेव के पश्चात् सिंघण नाम का शासक हुआ। सिंघण लक्ष्मीदेव का पुत्र था। लक्ष्मीदेव के पुत्र सिंघण ने शत्रु के 18 गढ़ जीते थे। इससे ऐसा प्रतीत होता है, कि सिंघण रतनपुर के राजा से बिगड़कर स्वतंत्र हो गया था। उसने रायपुर में अपनी राजधानी स्थापित की।

सिंघण के दो पुत्र थे डंधीर और रामचन्द्र। डंधीर कलचुरि राजवंश के रतनपुर के सिंहासन पर बैठा और रामचन्द्र को रायपुर राज्य का शासक बनाया गया। इस प्रकार रायपुर में कलचुरि राजवंश के प्रथम शासक के रूप में रामचन्द्र ने सत्ता स्थापित की।

रामचन्द्र– हैहयवंशी कलचुरि राजवंश में रायपुर शाखा में शासक के रूप में सिंघण के छोटे पुत्र रामचन्द्र का नाम मिलता है। रामचन्द्र को शिलालेख में रामदेव कहा गया है। रामचन्द्र के पिता सिंघण ने 18 गढ़ जीते थे। रामचन्द्र ने अपने पिता द्वारा जीते इन 18 गढ़ों को अपनें अधीन रखकर, शांतिपूर्ण रूप से शासन का संचालन किया। इनके कार्यकाल में रायपुर नगर की बसावट एवं विस्तार कर राजधानी का रूप प्रदान किया।

ब्रह्मदेव– हैहयवंशी कलचुरि राजवंश की रायपुर शाखा के शासक रामचन्द्र के पश्चात् उसका पुत्र ब्रह्मदेव गद्दी पर बैठा। ब्रह्मदेव महान प्रतापी शासक था। इन्होंने अपने कार्यकाल में राज्य में शांति व्यवस्था एवं निर्माण कार्य को अत्यधिक महत्व दिया था। इन्हें 'राय' से अलंकृत किये जाने की जानकारी मिलती है। फलस्वरूप इन्हांने अपने नाम के आगे 'राय' ब्रह्मदेव लगाना पसंद किया। कहां जाता है, कि हैहयवंशी शासक ब्रह्मदेव राय के नाम से 'रायपुर' नाम पड़ा।

यहां नारायण मंदिर का निर्माण देवपाल नामक एक मोची के द्वारा कराया गया था। जिसमें नारायण की मुर्ति स्थापित है, जो छत्तीसगढ़ में सामाजिक समरसता का परिचायक है। 1458 ई. के शिलालेख के अनुसार राय ब्रह्मदेव के राज्यकाल में नायक हाजिराजदेव ने रायपुर में हाटकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था, यहां हाटकेश्वर मंदिर महादेव घाट के समीप स्थित शिव मंदिर है। ब्रह्मदेव के प्रधान ठाकुर का नाम त्रिपुरारिदव और पुरोहित का नाम महादेव था। इसी महादेव के नाम से खारून नदी के इस घाट का नाम महादेव घाट रखा गया। जहां नायक हाजिराजदेव ने शिवमंदिर की स्थापना की थी। जो आज भी हाटकेश्वर शिवमंदिर के नाम से विख्यात है।[3]

कलचुरि राजवंशीय हैहयवंशीय रायपुर शाखा को जो नामावली पायी जाती है। उसमें ब्रह्मदेव का नाम मिलता है, न ही उसके पुरखों का और न ही रतनपुरी सूची में लक्ष्मीदेव का नाम पाया जाता है। यद्यपि रायपुर की वंशावली केशवदेव से आरंभ होती है। जिसका समय 1410 ईस्वी लिखा हुआ पाया जाता है। परन्तु 1402 और 1414 ईस्वी के मध्य में ब्रह्मदेव का राज्य था, जैसा कि शिलालेख में उल्लेख है। यदि केशवदेव का समय 1420 ईस्वी मान लिया जाये तो अलबता कोई बाधा नही आती। अतः रायपुर के शासक हैहयवंशी राजाओं की सूची निम्नानुसार है :–

केशवदेव 1420 ई., भुवनेश्वरदेव 1438 ई., मानसिंहदेव 1463 ई., संतोषसिंहदेव 1478 ई., सूरतसिंहदेव 1498 ई., सम्मानसिंहदेव 1518 ई., चामुण्डासिंहदेव 1528 ई, बशीसिंहदेव 1563 ई, धनसिंहदेव 1582 ई., जैतसिंहदेव 1603 ई, फत्तेसिंहदेव 1615 ई., यादवसिंहदेव 1633 ई., सोमदत्तदेव 1650 ई., बलदेवसिंहदेव 1663 ई., उमेदसिंहदेव 1685 ई., बनवारीसिंहदेव 1705 ई., अमरसिंहदेव 1741 ई., शिवराजसिंहदेव 1750 ई.,

इस सूची में वर्णित कलचुरि शासकों का शासनकाल उपलब्धियों की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण नही है। जिस समय रतनपुर में पंत का आक्रमण हुआ। उस समय रतनपुर में रघुनाथसिंह और रायपुर में अमरसिंह नामक व्यक्ति शासन कर रहे थे।[4]

गजेटियर में सूरतसिंह देव का नाम छोड़ दिया गया है। बाबूरेवाराम ने उनका नाम सम्मानसिंहदेव लिखा हैं। गजेटियर में बलदेवसिंहदेव के पुत्र का नाम उम्मेदसिंहदेव दिया है। बाबूरेवाराम ने उनका नाम मेरसिंह दिया है। रतनपुर नरेश तखतसिंह ने रायपुर शाखा के नरेश अपने छोटे भाई को जो पत्र लिखा था, उसमें उन्होंने 'मेरसिंहदेव' ही सम्बोधित किया है, न कि उम्मेद सिंह। सन् 1689 का पत्र रतनपुर नरेश तखतसिंह ने रायपुर शाखा के नरेश मेरसिंह को जो पत्र लिखा था, वह इस प्रकार है :–

"श्री कृष्णकारी कान्ह विजय सखा स्वस्ति श्री महाराजधिराज श्री महाराज श्री राजा श्री राजा तख्तसिंहदेव राजे रतनपुर योग्य स्वस्ति श्री महाराज कुमार राजा श्री मेरसिंहदेव भाई प्रति लिखित अस जो तुम्हारे कई राज कई बटार दीन्हें मध्यस्थ पंच राजा श्री नरसिहदेव आदि सो जगइ नौटदिन्हें सेवा राजगद्दी कई सलाह सरई की परम्परा कहि.... निबाहि देने जया योग बिदा जगई–

	स्थान	ग्राम
(1)	रायपुर–	640
(2)	राजिम–	84
(3)	दुर्ग–	84
(4)	पाटन–	152
(5)	खल्लारी–	84

(6) सिरपुर– 84
(7) लवन– 252

यह परिगन सात सात भोग करि कई वर्त बूक करत जाइ। सही कातिक सुदी 5 संवत 1745 सही रामधार देवान कह तथा बाबू राम साय देवान।"[5]

अतः रेवाराम बाबू द्वारा दी गयी सूचना अधिक प्रामाणिक सिद्ध होती हैं। इसी प्रकार मेरसिंहदेव के पुत्र का नाम गजेटियर में बनबीरसिंहदेव दिया गया है। रोवाराम बाबू ने उसका नाम बरियारसिंहदेव लिखा हैं। देवनाथसिंह की भांति मेरसिंहदेव को भी रतनपुर से रायपुर शाखा का सिंहासन संभालने के लिए भेजा गया था। वह तख्तसिंह का छोटा भाई था। संभवतः बलदेवसिंहदेव का कोई पुत्र नही था इसलिए यह पराम्परानुसार व्यवस्था की गयी थो। एक शिलालेख पुरानी बस्ती में स्वतंत्रता सग्रांम सेनानी स्व.नंदकुमार दानी के निवास स्थान से प्राप्त हुआ था, जो कि वर्तमान में संग्रहालय में संरक्षित हैं। यह शिलालेख भी 14–15वीं शताब्दी का है।

इस शिलालेख का उल्लेख सर्वप्रथम मुनि कांतिसागर ने खण्डहरों का वैभव में किया किन्तु वे ठोस जानकारी नहीं दे पाये। तत्पश्चात् बालचन्द्र जैन ने शिलालेख का वाचन कर इसके महत्व पर प्रकाश डाला। लक्ष्मीशंकर निगम ने उक्त शिलालेख पर नये सिरे से जानकारी प्रदान की है। इस अभिलेख में श्री पीलाराय के पुत्रों द्वारा रायपुर, आरंग, तथा राजिम में बनवाये गये तालाब तथा मंदिरों की चर्चा की गयी है। राजनैतिक दृष्टिकोण से शिलालेख से कुछ जानकारी नहीं मिलती है।

केशवदेव के शासनकाल में उल्लेखनीय घटना का वर्णन नही मिलता, उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी भुवनेश्वरदेव (सन् 1463–1478) का शासनकाल कतिपय उल्लखनीय घटनाओं के कारण महत्वपूर्ण हैं।

भुवनेश्वरदेव के शासनकाल में नंदपुर (जयपुर, कोरापुर) के राजा विनायक देव के राज्य में विद्रोह फैल गया। विनायक देव विद्रोह को दबाने में असमर्थ थे। अतः उन्होंने भुवनेश्वर देव से सैन्य सहायता की याचना की। स्वयं विनायक देव रायपुर आये उन्होंने रायपुर को जैसा देखा उसका वर्णन इस प्रकार है– रायपुर समृद्ध व्यापारियों का नगर है। नगर के लोगों ने उसका सौहाद्रपूर्ण स्वागत किया। भुवनेश्वर ने जयपुर के राजा को शस्त्र तथा योद्धा देकर सहायता प्रदान की।

जयपुर की राजकन्या रतनपुर के राजा शंकरसहाय को ब्याही गयी थी। इस रिश्तेदार के कारण भुवनेश्वर देव ने विनायकदेव को सहायता देना अपना कर्तव्य समझा। भुवनेश्वरदेव के समय तक नदी तट पर जो किला था, वह ढह चुका था। अतः सन् 1460 में भुवनेश्वरदेव ने बुढ़ा तालाब के किले का निर्माण करवाया। इसके लिए रतनपुर नरेश शंकरसहाय ने भी धन की सहायता उपलब्ध की थी। भुवनेश्वरदेव के पिता केशवदेव ने इस स्थान पर पहलें ही अपना निवास स्थान बना लिया था। राजा का निवास होने के कारण किले के आसपास बस्ती विकसित हुई जो पुरानी बस्ती के नाम से जानी जाती रही। अब पुरानी बस्ती का नाम केवल इतिहास के पन्नों की ही शोभा बढ़ा सकता है। इतिहास के साथ छेड़–छाड़ करने में कुछ लोग बड़े चतुर होते हैं।

सन् 1650 में सोमदत्तसिंहदेव के समय दूधाधारी महाराज तुरतुरिया तपस्थली से रायपुर पधारे। सोमदत्तसिंहदेव ने उन्हें महाराजबंद के पास निवास के लिये स्थान दिया। सन् 1663 में बलदेवसिंहदेव रायपुर की गद्दी पर बैठे। रेवाराम बाबू ने लिखा है, कि उन्होंने 'नया रायपुर' बसाया। संभवतः उनका आशय 'नयापारा' से है। बलदेव सिंह देव का कोई पुत्र नही था।

अतः रतनपुर नरेश रणजीतसिंहदेव के समय उनके परिवार के मेरसिंह को रायपुर की गद्दी पर बैठाया गया। वे लगभग सन् 1685 के लगभग सिंहासनारूढ़ हुए। उन्होंने 'रजबंधा तालाब' का निर्माण करवाया। उनके पुत्र बरियारसिंहदेव सन् 1705 में गद्दी पर बैठे। उन्होंने 'राजा तालाब' का निर्माण करवाया। बरियार्रासंहदेव के दीवान रामचन्द्र कोका के पुरानी बस्ती में एक तालाब का निर्माण करवाया जो आजकल 'खो–खो तालाब' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

बरियारसिंहदेव के पश्चात् उनके पुत्र अमरसिंहदेव सन् 1735 में रायपुर की गद्दी पर बैठे। वे स्वयं अच्छे कवि तो थे ही विद्धानों के आश्रयदाता भी थे। रतनपुर के महाकवि गोपाल मिश्र के पुत्र पिंगलाचार्य कवि माखन अमरसिंहदेव के राज्याश्रित कवि थे। कवि माखन ने छंदविलास नामक छंदशास्त्र पर ग्रंथ लिखा। डॉ. नगेन्द्र ने उनहें हिन्दी के रीतिकाल के छः आचार्य कवियों में प्रमुख स्थान दिया है।[6]

राजा अमरसिंह का एक ताम्रपत्र संवत् 1792 विक्रम (सन् 1735) आरंग जिला रायपुर में पाया गया है। जिसमें राजा अमरसिंहदेव ने नंदू ठाकुर को कुछ रियासतें बख्शी थी। आरंग ताम्रपत्र में उल्लेख है कि राजा अमरसिंह ने नन्दू ठाकुर और घासीराय को छींटा (सामान्य विवाह) बूंदा (विधवा विवाह, पुर्नविवाह), गयारि (परित्यक्ता स्त्री से विवाह) तथा मई मुआरि (परिवार में मृत व्यक्ति की संपत्ति) पर कर देने हेतु छूट प्रदान की थी। यह ताम्रपत्र छत्तीसगढ़ के तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। मिराशी का मानना है कि अमरसिंहदेव का ताम्रपत्र लेख जो कलचुरि वंश से संबद्ध माना जाता है, में वंशावली का उल्लेख नहीं है एवं ऐतिहासिक महत्व का नहीं हैं।

अमरसिंह देव इस वंश के अंतिम राजा थे तथा वे 1750 ई. तक राज्य करते रहे। सन् 1750 में रायपुर पर नागपुर के भोंसलों का शासन स्थापित हो गया। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के इतिहास में कलचुरि राजवंश का महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय, ऋषिराज, छत्तीसगढ़ (दक्षिण कोसल) के कलचुरि, पृ.125
2. यदु, हेमू, छत्तीसगढ़ का वैभव"ाली इतिहास, पृ.48–49

3. उपरोक्त, पृ.49
4. वर्मा, भगवान सिंह, छत्तीसगढ़ का इतिहास, पृ.38
5. पाण्डेय, ऋषिराज, पूर्वोक्त, पृ.130–131
6. उपरोक्त, पृ.132–133
7. कलचुरी कालीन प्रमुख स्थलों का सर्वेक्षण व अवलोकन
8. विभागीय वेबसाइट
9. छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन विभाग की पत्र–पत्रिकाएँ।